MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:11-14 JULY 2026

पत्रकारिता में एआइ का बढ़ता प्रभाव, लेकिन संपादकीय विवेक सबसे बड़ी जरूरत

एमसीयू : डीपफेक और सिंथेटिक रियलिटी के दौर में वास्तविक तथ्यों की जांच ही पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत

नवदुनिया प्रतिनिधि भोपाल: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) और सिंथेटिक रियलिटी के तेजी से बढ़ते दौर ने पत्रकारिता के सामने नई और गंभीर चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। अब केवल सूचना प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके प्रत्येक पहलू की गहन पड़ताल और पुष्टि करना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। यही कारण है कि आज के न्यूजरूम में तकनीक के साथ-साथ संपादकीय विवेक और तथ्य जांच की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण बन गई है।

एआइ का बढ़ता प्रभाव पर शुक्रवार को एमसीयू में आयोजित कार्यशाला में बड़ी संख्या में विद्यार्थी और शिक्षक शामिल हुए। ● सौजन्य : आयोजक

यह बात वरिष्ठ पत्रकार प्रत्यूष रंजन ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में आयोजित एआइ आधारित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) के तीसरे दिन शुक्रवार को आयोजित तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि बिना पुष्टि और बैकग्राउंड जांच के किसी भी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित करना पत्रकारिता की विश्वसनीयता के लिए खतरा बन सकता है। कई बार विश्वसनीय प्रतीत होने वाले स्रोतों से भी भ्रामक या अपुष्ट जानकारी मिल सकती है, इसलिए हर सूचना की बहुस्तरीय जांच आवश्यक है।

रंजन ने कहा कि आज एआइ के माध्यम से वास्तविक दिखने वाले डीपफेक वीडियो, आडियो और तस्वीरें तैयार की जा रही हैं, जिन्हें पहचानना कठिन होता जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि एआइ स्वयं गलत सूचना नहीं बनाता, बल्कि उसके दुरुपयोग से लोग फर्जी और भ्रामक सामग्री तैयार करते हैं। ऐसे में मीडिया संस्थानों को तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक जिम्मेदारी भी निभानी होगी। उन्होंने डीपफेक की पहचान और जांच की सात प्रमुख प्रक्रियाओं की जानकारी देते हुए बताया कि आडियो एकास्टिक विश्लेषण, विजुअल मेटाडेटा, संदर्भ सत्यापन, नेटवर्क विश्लेषण व ग्राउंड रियलिटी चेक जैसी प्रक्रियाएं संदिग्ध सामग्री की सच्चाई सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को गूगल पिनपाइंट, गूगल सिंथआइडी सहित कई आधुनिक एआइ आधारित सत्यापन उपकरणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया।

समकालीन विषयों पर देंगे प्रतिष्ठित विशेषज्ञ प्रशिक्षण

कार्यक्रम के एक अन्य तकनीकी सत्र में मीडिया शोध विभागाध्यक्ष प्रो. सीपी अग्रवाल ने शिक्षा, शोध और मीडिया के क्षेत्र में एआइ टूल्स की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एआइ का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग किया जाए तो अकादमिक अनुसंधान व शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार संभव है। एफडीपी में विभि के विभिन्न विभागों के शिक्षक शामिल हुए। आगामी सत्रों में प्रतिभागियों को जेनरेटिव एआइ, डीपफेक, सिंथेटिक मीडिया फोरेंसिक्स, एआइ-न्यूजरूम आर्किटेक्चर, एआइ एविडेंस तथा मल्टीप्लेटफार्म डेटा विश्लेषण जैसे समकालीन विषयों पर देश के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ प्रशिक्षण देंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'11 JULY.2026

एमसीयू के एआइ फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में पत्रकार प्रत्यूष रंजन बोले-

भविष्य के न्यूजरूम को बदल देगा एआइ तकनीक के साथ खुद को रखें अपडेट

एमसीयू में एआइ पर आयोजित कार्यशाला बड़ी संख्या में विद्यार्थी और शिक्षक शामिल हुए। ● सौजन्य : आयोजक

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में आयोजित एआइ फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) के चौथे दिन वरिष्ठ पत्रकार प्रत्यूष रंजन ने कहा कि अगले पांच वर्षों में मीडिया इंडस्ट्री के न्यूजरूम पूरी तरह बदल जाएंगे। पत्रकारों और मीडिया शिक्षकों को नई तकनीकों के साथ खुद को अपडेट करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि एआइ टूल्स डेटा विश्लेषण, तथ्य प्रस्तुत करने और विजुअल कंटेंट तैयार करने में सहायक हैं, लेकिन समाचारों के प्रकाशन में अंतिम निर्णय संपादकीय विवेक से होना चाहिए।

प्रत्यूष रंजन ने प्रभावी प्राम्प्ट लिखने की आवश्यकता पर जोर देते हुए विभिन्न विजुअलाइजेशन टूल्स और एआइ आधारित वीडियो निर्माण का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में सिर्फ सार्वजनिक दस्तावेज और डेटा का एआइ के माध्यम से उपयोग किया जाना चाहिए, जबकि गोपनीय दस्तावेजों को एआइ प्लेटफार्म पर प्रोसेस करने से बचना चाहिए। प्रश्नोत्तर सत्र में उन्होंने डिजिटल युग में समाचार पत्रों और पुस्तकों की प्रासंगिकता पर चर्चा की।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजयमनोहर तिवारी ने कहा कि यह एफडीपी आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आगामी सत्रों में एआइ एथिक्स, जेनरेटिव कंटेंट, सिंथेटिक मीडिया फोरेंसिक्स, डीपफेक और एआइ न्यूजरूम जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञ प्रशिक्षण दिया जाएगा।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'12 JULY.2026

एमसीयू में 22 से शिक्षक विकास कार्यक्रम

■ शिक्षकों को सिखाई जाएंगी आनंदपूर्ण शिक्षण तकनीकें

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के रेखी सेंटर फॉर एक्सीलेंस फॉर द साइंस ऑफ हैप्पीनेस की ओर से 22 से 24 जुलाई तक 'द जॉयफुल एजुकेटर : एक्सपीरियेंशियल वेल-बीइंग एंड एप्लाइड पॉजिटिव साइकोलॉजी' विषय पर तीन दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) आयोजित किया जाएगा। यह प्रशिक्षण विश्वविद्यालय की नालंदा लाइब्रेरी स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में प्रतिदिन सुबह 10:30 बजे से शाम 5 बजे तक होगा।एफडीपी की समन्वयक सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर मनीषा वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में रेखी फाउंडेशन के प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस डॉ. श्रीहरि कृष्णा और सीनियर फैकल्टी डॉ. रीतू शर्मा विशेषज्ञ प्रशिक्षक के रूप में शिक्षकों को सकारात्मक मनोविज्ञान और वेल-बीइंग के व्यावहारिक पहलुओं का प्रशिक्षण देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी करेंगे, जबकि कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला भी उपस्थित रहेंगी। निःशुल्क आयोजित इस एफडीपी को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए जाएंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH'13 JULY.2026

'मीडिया इंडस्ट्री में एआइ की महारत जरूरी लेकिन संपादकीय विवेक का विकल्प नहीं'

एमसीयू ● न्यूजरूम में एआइ के बढ़ते उपयोग व पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर विशेषज्ञों ने रखे विचार

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में आयोजित एआइ संकाय विकास कार्यशाला (एफडीपी) में सोमवार को वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश पराशर ने कहा कि आज एआइ के बिना किसी भी क्षेत्र में काम करना मुश्किल होता जा रहा है। मीडिया इंडस्ट्री में एआइ एक सहकर्मी की तरह काम कर रही है और न्यूजरूम की कार्यप्रणाली तेजी से बदल रही है।

उन्होंने कहा कि एआइ के पास उपलब्ध विशाल आंकड़ों के आधार पर समाचारों का चयन व प्रस्तुतीकरण अधिक प्रभावी हो रहा है, लेकिन समाचारों के स्रोतों की पुष्टि और तथ्यों की जांच का कार्य हमेशा अनुभवी पत्रकार ही करेंगे। इसलिए मीडिया और संचार क्षेत्र के पेशेवरों के लिए एआइ तकनीक में दक्षता हासिल करना समय की आवश्यकता है।

एमसीयू में आयोजित कार्यशाला में संबोधित करते वक्ता व मौजूद लोग। ● सौ: आयोजक

उन्होंने कहा कि स्वचालित न्यूजरूम का दौर शुरू हो चुका है और खोजी पत्रकारिता, जनसंपर्क, कार्पोरेट संचार तथा विज्ञापन जैसे क्षेत्रों में भी एआइ का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। इससे कार्यक्षमता और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तकनीकी सत्र में मीडिया इनोवेशन व प्रोडक्ट मैनेजमेंट विशेषज्ञ रक्षित भाटिया ने जेनेरेटिव एआइ और एजेंटिक एआइ के व्यावहारिक उपयोगों पर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि आज लगभग हर न्यूजरूम किसी न किसी रूप में एआइ का उपयोग कर रहा है। समाचार लेखन, आडियो-वीडियो निर्माण, डेटा आधारित रिपोर्ट तैयार करने और रचनात्मक सामग्री विकसित करने जैसे कार्य तेजी से एआइ की मदद से किए जा रहे हैं।

डिजिटल मीडिया के वरिष्ठ पत्रकार धनंजय ने कहा कि एआइ ने पत्रकारिता की कार्यशैली में बड़ा बदलाव किया है। अब समाचार संस्थानों के लिए माइक्रोड्रामा जैसे नए प्रारूप भी एआइ से तैयार किए जा रहे हैं, जिन्हें दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। उन्होंने कहा कि एआइ से काम आसान हुआ है, लेकिन तथ्य जांच, विश्वसनीयता और संपादकीय विवेक की जिम्मेदारी हमेशा पत्रकारों की ही रहेगी। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे। आगामी सत्रों में एआइ और जनरेटिव कंटेंट, डीपफेक, सिंथेटिक मीडिया फोरेंसिक, एआइ न्यूजरूम आर्किटेक्चर, मल्टीप्लेटफार्म डेटा और एआइ नैतिकता जैसे विषयों पर विशेषज्ञ प्रशिक्षण देंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'14 JULY.2026

एमसीयू में एआई एफडीपी का पांचवा दिन

मीडिया इंडस्ट्री में एआई की मास्टरिंग भी जरूरी: जयप्रकाश पराशर

एमसीयू में चल रहे एआई एफडीपी में विषय विशेषज्ञों ने रखे विचार, किया संवाद

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

एआई के बिना आज किसी भी सेक्टर में काम नहीं चल सकता। मीडिया हो या कोई दूसरी इंडस्ट्री,एआई तकनीक एक को-वर्कर की तरह हमारे लिए बहुत उपयोगी साबित हो रही है। न्यूजरूम में टेक्नॉलाजी के कारण बहुत से बदलाव आ रहे हैं। एआई के पास डेटा है जिसके आधार पर मीडिया में न्यूज का प्लेसमेंट और प्रजेंटेशन बदल रहे हैं। लेकिन इस सबके बावजूद न्यूजरूम में सोर्स को वेरिफाई करने वाले एक्सपर्ट्स की हमेशा मांग बनी रहेगी। इन विशेषज्ञों को एआई कभी भी रिप्लेस नहीं कर सकेगी। मीडिया और कम्युनिकेशन के प्रोफेशनल्स को एआई जैसी अपडेटेड टेक्नालाजी सीखना जरूरी है। यह बात सोमवार को एमसीयू में चल रहे एआई एफडीपी में वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश पराशर ने कही। जयप्रकाश पराशर ने कहा कि मौजूदा समय में जर्नलिज्म में आटोमेटेड न्यूज रूम बन रहे हैं। खोजी पत्रकारिता में भी एआई का खूब उपयोग हो रहा है। उन्होंने कम्युनिकेशन और मीडिया के हर क्षेत्र में एआई को कार्यक्षमता बढ़ाने में मददगार बताया। कार्पोरेट कम्युनिकेशन, पीआर और एडवर्टाइजिंग इंडस्ट्री में उपयोग होने वाले विविध एआई टूल्स पर उन्होंने अपनी बात रखी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागों के शिक्षक उपस्थित थे। इस एफडीपी के आगामी दिनों में आयोजित सत्रों में एआई और जेनरेटिव कंटेंट, मल्टिफार्म डेटा विद पिनपाइंट, डीपफेक, सिंथेटिक मीडिया फोरेंसिक्स, एआई न्यूजरूम आर्किटेक्चर, एआई एथिक्स सहित कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर देश के जाने-माने विशेषज्ञ प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देंगे।

एआई और एजेंटिक एआई के अनुप्रयोगों पर दिया प्रशिक्षण

पांचवे दिन एफडीपी के तकनीकी सत्र में मीडिया इनोवेशन और प्रोडक्ट मैनेजमेंट एक्सपर्ट रक्षित भाटिया ने एआई, जेनेरेटिव एआई और एजेंटिक एआई के अनुप्रयोगों पर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि आज हर न्यूजरूम में एआई किसी न किसी तरह काम कर रहा है। इसमें लगातार आने वाले अपडेट्स पर बात करते हुए श्री भाटिया ने कहा कि मीडिया और क्रिएटिव इंडस्ट्री में आर्टिकल लिखने से लेकर ऑडियो- वीडियो प्रोडक्शन और डेटा स्टोरी तैयार करने के काम एआई से ही हो रहे हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTI'14 JULY.2026

एमसीयू में द जॉयफुल एजुकेटर 22 जुलाई से

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के रेखी सेंटर में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया जाएगा। 'द जॉयफुल एजुकेटर' विषय पर होने वाले तीन दिन के आयोजन की शुरुआत 22 जुलाई से होगी। कार्यक्रम विश्वविद्यालय की नालंदा लाइब्रेरी के कॉन्फ्रेंस हॉल में होगा। समन्वयक मनीषा वर्मा के अनुसार, रेखी फाउंडेशन के डॉ. श्रीहरि कृष्णा और डॉ. रीतू शर्मा शिक्षकों को मनोविज्ञान व वेल-बीइंग के व्यावहारिक प्रयोग सिखाएंगे। अध्यक्षता कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी करेंगे और कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला उपस्थित रहेंगी। इसका उद्देश्य आनंदपूर्ण शिक्षण पद्धतियों से छात्रों का मानसिक विकास करना है। प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए जाएंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'14 JULY.2026